1857 के बाद जनजातियों की संपदा तथा शोषण की गति और तीव्र कर दी गयी।

1878 के भारतीय वन अधिनियम द्वारा वन भूमि एवं इसके उत्पादों पर आदिवासियों के परम्परागत अधिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

मुंडा विद्रोह — (1895 - 1900) रांची तथा सिंहभूम के क्षेत्रों में प्रसारित एवं बिरसा मुंडा द्वारा संचालित। इसे उलगुलान (विद्रोह) भी कहा जाता है।

यह सबसे विशिष्ट जनजातीय आंदोलन था क्योंकि, अन्य जातीय आंदोलन महज लगान विरोधी या भूमि से बेदखली के विरुद्ध थे वहीं मुंडा आंदोलन अंग्रेजों तथा बाहरियों के शोषण की समाप्ति के साथ-साथ मुंडाओं की आंतरिक सामाजिक-धार्मिक बुराइयों तथा उनकी कुरीतियों के विरुद्ध था।

इस आंदोलन में जनजातियों के समस्याओं के ~~समाधान~~ स्थायी समाधान की आकांक्षा थी। बिरसा ने महारानी राज की समाप्ति तथा 'अबुआ राज' (हमारा राज) का नारा दिया।